शोध मंथन Vol. XVII No.1 Jan.- Mar. 2026 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X, Impact Factor 8.889 (SJIF)
https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i01.09

# हिंदी पत्रकारिता का अविर्भाव, विकास और सरोकारः एक अध्ययन

प्राप्तिः 28.02.26
स्वीकृतः 14.03.26

09

**रणजीत कुमार**
*असिस्टेंट प्रोफेसर (पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग)*
*मौलाना मजहरूल हक अरबी व फारसी विश्वविद्यालय, पटना*
*ईमेलः doctorranjitkumar@gmail.com*

***सारांश***

*हिंदी पत्रकारिता ने हमारे देश में जनभावनाओं को स्वर देने के साथ जनमत निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसकी शुरूआत के दिन काफी कठिन रहे। पहले पत्र उदंत मार्तंड का प्रकाशन घाटे के कारण बंद हो गया जबकि उसी दौर में अनेक पत्र–पत्रिकाओं को तात्कालीन ब्रिटिश हुकूमत से कई प्रकार की सहायता मिलती रही। अंग्रेजी पत्रकारिता की तुलना में हिंदी पत्रकारिता का आरंभ लगभग आधे सदी बाद हुई। इस आरंभ का भी जल्द अवसान हो गया। पुनः हिंदी पत्रकारिता का विकास लगभग एक दशक बाद शुरू हुआ। इसके बाद हिंदी पत्रकारिता का प्रभाव तेजी से बढ़ने लगा। इस प्रभावशीलता के कारण ही स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान दूसरी भाषाओं के समाचारपत्रों और पत्रिकाओं की सामग्री का हिंदी में रूपांतरण होने लगा। उस समय के सेनानियों ने अपनी बात को जनता तक पहुंचाने के लिए हिंदी के पत्र–पत्रिकाओं को प्राथमिकता दी। स्वतंत्रता के बाद हिंदी पत्रकारिता का उत्कर्ष जगजाहिर है।*

***मुख्य शब्द***

*हिंदी समाचार पत्र, पत्रिका, पत्रकारिता, स्वतंत्रता आंदोलन, सरोकार।*

**प्रस्तावनाः** सूचनाएं जनमत को दिशा देने के साथ–साथ कई रूपों में प्रभावित करता है। सूचनाओं के अधिकतम प्रवाह में भाषा की महती भूमिका होती है क्योंकि लक्षित समूह जिस भाषा को अधिक जानता है उस भाषा में ही सूचनाओं को ग्रहण करते हैं। इस दिशा में सूचनाओं के संप्रेषण में हिंदी पत्रकारिता का योगदान जगजाहिर है। हमारे देश में बहुसंख्यकों की भाषा हिंदी है। इसलिए इस भाषा में जब कोई सूचना संप्रेषित की जाती है तो लगभग सभी क्षेत्रों के लोगों तक पहुंच जाती है। अंग्रेजी पत्रकारिता के दौर में बहुसंख्यक हिंदी भाषी आधुनिक सूचनाओं से लगभग वंचित रहते थे। इस दिशा में पहला कार्य उदंत मार्तंड ने किया। लेकिन हिंदी के विकास और विस्तार के अभाव में यह पत्र जल्द ही बंद हो गया। अंग्रेजी सरकार उस समय कई भाषाओं के पत्र–पत्रिकाओं को

आर्थिक सहायता प्रदान करती थी लेकिन उदंत मार्तंड इस सुविधा से वंचित रहा।[1] इस पत्र के प्रमुख कारणों में एक यह भी है। बाद के सालों में हिंदी पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन ने हिंदी पत्रकारिता को बढ़ावा दिया जिसका सरोकार हर दौर में भिन्न– भिन्न रहा।

**साहित्य पुनरावलोकनः** अंबिका प्रसाद वाजपेई ने समाचार पत्रों का इतिहास में इस बात का उल्लेख किया है कि ''पहला हिंदी समाचार पत्र 'उदंत मार्तंड' है। यह पत्र प्रति मगंलवार को कलकते से प्रकाशित होता था।''[2] इस समाचार पत्र के पत्रकारीय सरोकार के बारे में बताते हुए कृष्णबिहारी मिश्र ने 'हिंदी पत्रकारिता' में बताया है कि ऊंचे आदर्श को लेकर हिंदी के इस प्रथम पत्र का प्रकाशन हुआ था। प्रति मंगलवार को प्रकाशित होनेवाला यह पत्र सरकारी सहायता के अभाव तथा पर्याप्त ग्राहकों की कमी के कारण चार दिसंबर 1827 को बंद हो गया।[3]

हिंदी पत्रकारिता के बारे में जे. नटराजन ने 'भारतीय पत्रकारिता के इतिहास' नामक पुस्तक में इस बात का उल्लेख किया है कि ''1884 और 1894 के मध्य तकरीबन 150 अखबारों का प्रकाशन शुरू हुआ, जिनमें से कुछ नए थे और कुछ का पुनर्प्रकाशन शुरू हुआ। इनमें से ज्यादातर अखबारों की विषय–वस्तु सामाजिक या धार्मिक होती थी। बहुत से पत्र संप्रदायगत थे, कुछ राजनीतिक थे और कुछ पत्र प्रांतीय तथा कुछ साहित्यिक स्तर के भी थे।''[4]

'हिंदी पत्रकारिता स्वरूप एवं संदर्भ में' विनोद गोदरे ने द्वितीय और तृतीय अध्याय में हिंदी पत्रकारिता के उद्‌भव और विकास के बारे में विस्तार से चर्चा की है। इनके अनुसार ''हिंदी पत्रकारिता का जन्म ही स्वतंत्रता, स्वभाषा प्रेम, सामाजिक सुधार, शोषण और भ्रष्टाचार के खिलाफ संघर्ष के शस्त्र के रूप में हुआ था।''[5]

हिंदी पत्रकारिता के आरंभिक दौर और सरोकार के बारे में पुस्तक 'मीडिया समग्र' में डॉ. अर्जुन तिवारी ने कहा है– ''हिंदी पत्रों की उद्‌भावना के मूल में युगुल किशोर सुकुल की साधना है जिसको आगे बढ़ाने में भारतेंदु मंडल का महत्वपूर्ण योगदान है।''[6]

अनुशब्द का कहना है कि स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान हिंदी के अनेक समाचारपत्र और पत्रिकाओं का प्रकाशन होता था। इन पत्रों के प्रकाशक और संपादक अनेक मतभेदों के बावजूद राष्ट्रहित को सर्वोपरी रखकर एक स्वर में साथ हो जाते थे।[7]

**सैद्धांतिक आधारः** प्रत्येक विषय को उसके परिधि के अंतर्गत ही व्याख्या और विस्तार किया जाता है। लोकप्रिय विषयों के बारे में अनेक मत भी जुड़े होते हैं जिससे एक सार्वभौमिक सिद्धांत का उद्‌भव हो जाता है। यही सिद्धांत आगे चलकर विषय को सरल रूप में प्रस्तुत करता है जिससे संबंधित विषय का अध्ययन आसान हो जाता है।

**एजेंडा सेटिंगः** मीडिया जनमत को इसलिए प्रभावित करता है क्योंकि मीडिया की नजर से ही लोग देश और दुनिया को देखते हैं। इस संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि मीडिया ही तय करता है कि कौन सी सूचना प्रमुख है और कौन सी सूचना गौण।[8] हिंदी का एक विशाल वर्ग है जो हिंदी समाचारपत्रों के माध्यम से सूचनाओं को ग्रहण करता है समाज में अनेक घटनाएं होती हैं लेकिन सभी घटनाएं समाचार नहीं बन पाती हैं। कुछ घटनाओं को कई बार मीडिया जानबूझकर अनदेखा करता है और अनेक बार बिना सामाजिक सरोकार के प्रमुख स्थान दे देता है। इस प्रकार की घटनाएं

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i01.09

अक्सर समाचारपत्रों की दुनिया में दिखाई पड़ती है। इसी संदर्भ में यह कहा गया है कि मीडिया न केवल घटनाओं को समाचार के रूप में चुनता है बल्कि उनका क्रम भी तय करता है।[9] इसकी यह विशेषता एजेंडा तय कर जनमत निर्माण करता है।

**शोध प्रविधिः** प्रस्तुत शोध का अध्ययन द्वितीयक सामग्री पर केंद्रित है। क्योंकि इस विषय पर लगभग सभी सामग्री पूर्व से ही उपलब्ध है। हिंदी पत्रकारिता के अविर्भाव, विकास और सरोकार को समझने के लिए मुख्यतः पुस्तकों का अध्ययन करके विश्लेषण किया गया है। इसलिए इस शोध में विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। विश्लेषणात्मक शोध के बारे में कहा गया है कि इसमें उपलब्ध तथ्यों और सूचनाओं का उपयोग कर मूल्यांकन हेतु विश्लेषण किया जाता है।[10]

**उपकल्पनाः** हिंदी पत्रकारिता का फलक बेहद व्यापक है।

**उद्देश्यः** हिंदी पत्रकारिता के अविर्भाव, विकास और सरोकार को प्रस्तुत करना।

**महत्वः** हमारे देश ही नहीं दुनिया में हिंदी पत्रकारिता का परचम लहरा रहा है। क्योंकि इस भाषा को जानने और समझनेवाले दुनिया के प्रत्येक कोने में मौजूद हैं। इन हिंदी भाषियों तक इंटरनेट के माध्यम से प्रतिक्षण सूचनाएं संप्रेषित हो रही हैं। लेकिन हिंदी पत्रकारिता की शुरूआत काफी संघर्षशील रहा है। इसके बावजूद हिंदी पत्रकारिता हर दौर में अपनी अमिट छाप छोड़ी है। प्रत्येक दौर में इसकी पत्रकारिता का सरोकार भिन्न– भिन्न रहा है। इस विषय पर कार्य करना बेहद महत्वपूर्ण है।

**प्रासंगिकताः** हिंदी पत्रकारिता का निरंतर विकास हो रहा है। विशेष रूप से समाचारपत्र और पत्रिकाओं ने अलग– अलग विधाओं में लगातार सूचनाओं को संप्रेषित कर रहे हैं। तकनीक के इस दौर में भी ये कदम से कदम मिलाकर चल रहे हैं। इनकी प्रभावशीलता और पहुंच लगातार बढ़ रही है। ऐसे में इसके ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की चर्चा करना बेहद प्रासंगिक है।

**विश्लेषणः** हमारे देश में आधुनिक पत्रकारिता की शुरूआत अंग्रेज कर्मचारी जेम्स ऑगस्ट हिक्की ने 29 जनवरी 1780 से अंग्रेजी भाषा के समाचारपत्र 'हिक्की गजट' से की। इस पत्र के प्रकाशन के बाद अंग्रजी भाषा में अनेक पत्रों का प्रकाशन होने लगा लेकिन हिंदी भाषा में पहले समाचारपत्र का प्रकाशन 30 मई 1826 को हुआ। इस पत्र का नाम का नाम 'उदंत मार्तंड था। इसका प्रकाशन युगुल किशोर शुक्ल ने कोलकाता से किया लेकिन आर्थिक अभाव में यह पत्र जल्द ही समाप्त हो गया। इस प्रकार हिंदी पत्रकारिता की शुरूआत हुई।

हिंदी समाचारपत्रों के विकास और उनकी पत्रकारीय सरोकार को दर्शाने के लिए इसे पांच भागों में बांटा गया है। 1. पूर्व भारतेंदु युग 2. भारतेंदु युग 3. द्विवेदी युग 4. गांधी युग और 5. स्वातंत्र्योत्तर युग

## भारतेंदु युग के पूर्व काल की हिंदी पत्रकारिता (1826– 1867)

हिंदी के प्रथम समाचारपत्र के प्रकाशक और संपादक युगुल किशोर शुक्ल (युगुल किसोर सुकुल) उत्तर प्रदेश के कानपुर के रहनेवाले थे। इन्होंने कोलकाता से ही अपने प्रथम पत्र के प्रकाशन की शुरूआत की। अंबिका प्रसाद वाजपेई ने समाचार पत्रों के इतिहास में 'उदंत मार्तंड' की भाषा के बारे में लिखा है कि पत्रिका की हिंदी में ब्रजभाषा, अंग्रेजी और फारसी के शब्दों का समावेश था। यह हिंदी का आरंभिक काल था फिर भी युगुल किशोर शुक्ल ने उस समय के बेहतर हिंदी भाषा संयोजन में

प्रकाशित किया।[11] पत्रकारिता के क्षेत्र में 'उदंत मार्तंड' ने कोई विशेष उपलब्धि तो नहीं हांसिल की लेकिन भाषाई स्तर पर लोगों का ध्यान हिंदी भाषा की तरफ जरूर आकर्षित हुआ। इस साप्ताहिकी ने हिंदी में समाचार पत्र और पत्रिकाओं के प्रकाशन के लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया। इस आरंभिक दौर में 10 मई 1829 को कलकता से 'बंगदूत' का प्रकाशन होना आरंभ हुआ। यह साप्ताहिक दो बंग्ला और हिंदी दो भाषाओं में प्रकाशित होती थी। 1848 में राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद ने बनारस से चर्चित समाचार पत्र 'बनारस अखबार' का प्रकाशन आरंभ किया। इस समाचार पत्र में अरबी– फारसी भाषा के शब्दों की बहुलता रहती थी। 1848 में इंदौर से 'मालवा अखबार' 1850 में बनारस से 'सुधाकर', 1853 में ग्वालियर से 'ग्वालियर गजट',1854 में कलकता से 'समाचार सुधावर्षण', 1855 में आगरा से 'बुद्धि प्रकाश', 1878 में कलकता से 'भारत मित्र', 1879 में कलकता से 'सार सुधानिधि' और 1880 में उचित वक्ता जैसे अनेक समाचार पत्र और पत्रिकाएं देश के विभिन्न क्षेत्रों से हिंदी में प्रकाशित हुई। इस दौर के पत्र–पत्रिकाओं का सरोकार साहित्यिक, समाज सुधार, जागरूकता आदि से संबंधित था।

## भारतेंदु युग (1867– 1900)

आदि युग से परिष्कृत होती हिंदी भारतेंदु युग में लगभग व्यवस्थित हो चली। इस दौर में भारतेंदु हरिश्चंद्र (09 सितंबर 1850 से 06 जनवरी 1885) ने हिंदी की गद्य विधा को भाषाई रूप से समृद्ध बना दिया। इसके पूर्व हिंदी अनेक बोलियों में पद्य रूप में उपस्थित तो था लेकिन गद्य का स्वरूप पूर्णतः विकसित नहीं हुआ था। इस विधा को सजाने और संवारने का श्रेय भारतेंदु हरिश्चंद्र को ही जाता है। इसलिए उन्हें हिंदी गद्य का जनक भी कहा जाता है। ''हिंदी पत्रों की उद्भावना के मूल में युगुल किशोर सुकुल की साधना है जिसको आगे बढ़ाने में भारतेंदु मंडल का महत्वपूर्ण योगदान है। उद्बोधन काल की पत्रकारिता ने 'उत्तिष्ठत जाग्रत् प्राप्यवरान्निबोधन' से पाठकों को उद्बुद्ध किया, उन्हें अपने कर्तव्य का बोध हुआ। उद्भव काल के उद्बोधक पत्रों को परखते हुए इसे उद्बोधन काल के रूप में प्रतिष्ठित करना समीचीन है जिसने भावी पत्रकारिता को बहुमुखी आयाम और जागरण का शुभ संदेश दिया।''[12] भारतेंदु हरिश्चंद्र ने 15 अगस्त 1867 से अपने पहले पत्रिका 'कवि वचन सुधा' का प्रकाशन शुरू किया। आरंभ में यह पत्र मासिक था, बाद में अर्द्धमासिक और फिर साप्ताहिक में परिवर्तित हो गया। भारतेंदु ने 1873 में 'हरिश्चंद्र मैगजीन' का प्रकाशन आरंभ किया जिसका नाम बदलकर 1874 में 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' हो गया। साहित्य की इस पत्रिका को उस समय काफी लोकप्रियता मिली। इसी से प्रेरित होकर उन्होंने 1874 में ही महिलाओं पर केंद्रित 'बालबोधिनी' पत्रिका का भी प्रकाशन शुरू कर दिया। इस दौर में हिंदी पत्र– पत्रिकाओं की लोकप्रियता काफी बढ़ने लगी। हिंदी के पाठक अपनी भाषा में साहित्य को पढ़ने लगे। 1880 में 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' का विलय 'मोहन चंद्रिका' में कर दिया गया। 1884 में उन्होंने 'नवोदित हरिश्चंद्र चंद्रिका' का प्रकाशन किया।

भारतेंदु हरिश्चंद्र की साहित्यिक यात्रा ने हिंदी को बेहद समृद्ध बना दिया। अपने युग में उन्होंने लगभग आधा दर्जन पत्र– पत्रिकाओं के माध्यम से हिंदी भाषा को लोकप्रिय बनाने में निरंतर लगे रहे। यह कहा जा सकता है कि उन्होंने अल्प जीवन में हिंदी के लिए तन, मन और धन सबकुछ समर्पित कर दिया। भारतेंदु युग में 350 से अधिक पत्र– पत्रिकाओं का प्रकाशन हिंदी भाषा में हुई। भारतेंदु

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i01.09

मंडल के सदस्य बालकृष्ण भट्ट द्वारा प्रकाशित मासिक 'हिंदी प्रदीप' का प्रयाग से सितंबर 1877 में प्रकाशन शुरू किया। 1910 में माधव शुक्ल की कविता 'जरा सोंचो तो यारों यह क्या है?' का प्रकाशन होने के बाद इस पत्रिका को हमेशा के लिए प्रतिबंधित कर दिया गया। 1871 में उत्तर प्रदेश (वर्तमान में उत्तराखंड) से 'अल्मोड़ा अखबार' प्रकाशित हुआ। इसी दौर में कलकता से प्रकाशित होनेवाले साप्ताहिक 'बिहार बंधु' का 1874 से पटना से प्रकाशन होने लगा। इस पत्र को बिहार का पहला हिंदी का पत्र होने का गौरव प्राप्त है।

**द्विवेदी युग (1900– 1920)**

हिंदी पत्रकारिता में इस युग का नाम महावीर प्रसाद द्विवेदी (15 मई 1864– 29 दिसंबर 1938) के नाम पर पड़ा है। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इस दौर में 'सरस्वती' मासिक के माध्यम से हिंदी को व्याकरणिक रूप से परिष्कृत किया। इस पत्रिका का भाषा साहित्यिक और शुद्ध होती थी। इसीलिए इस युग में अधिकांशतः 'सरस्वती' की ही चर्चा मिलती है। 'सरस्वती' का प्रकाशन इंडियन प्रेस के अध्यक्ष चिंतामणी घोष ने 1900 में आरंभ किया। ''महावीर प्रसाद द्विवेदी के संपादक बनने से पूर्व 'सरस्वती' पर 'नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा अनुमोदित' प्रकाशित होता था। इसका तात्पर्य यह था कि पत्रिका को नागरी प्रचारिणी सभा का समर्थन प्राप्त है। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने संपादक बनने के बाद इस वाक्य को लिखना बंद करा दिया। इससे बाबू श्याम सुंदर दास काफी नाराज हुए।''[13]

महावीर प्रसाद द्विवेदी संपादक बनने से पूर्व 'सरस्वती' में लेख और कविता प्रकाशित होने के लिए प्रेषित करते रहते थे। 1903 में ये 'सरस्वती' के संपादक बने और लगभग 30 वर्षों तक इस पद पर बने रहे। यह कहा जाता है कि इस दौर में इस पत्रिका में लेखनी के माध्यम से अनेक पत्रकार और साहित्यकार प्रशिक्षित होकर निकले। इस दौर के पत्र– पत्रिकाओं में कलकता से प्रकाशित 'नृसिंह' (1907), 'देवनागर' (1907), 'कलकता समाचार' (1914), 'विश्वमित्र' (1916) और स्वतंत्र (1920) आदि शामिल हैं। ''हिंदी समाचारपत्रों ने भाषा के क्षेत्र में ही नहीं बल्कि स्वाधीनता के संघर्ष में भी योगदान दिया।''[14]

**गांधी युग (1920– 1947)**

इस युग की शुरूआत 1920 से होकर आजादी तक जाती है। इसी युग में हिंदी पत्रकारिता अपने सौवें साल में प्रवेश कर नवीन कीर्तिमान स्थापित करती है। इस दौर की हिंदी पत्रकारिता ने सामाजिक जागरूकता के साथ स्वतंत्रता आंदोलन की अलख भी जगाई। ''गांधीजी के पत्रों में कोई विज्ञापन प्रकाशित नहीं होता था। उनके पत्रों की प्रसार– संख्या व्यापक थी तथा समाचार एजेंसियां गांधीजी के लेखों को उसी दिन या अगले दिन समाचार पत्रों में एक साथ प्रकाशित होने के लिए दैनिक समाचारपत्रों को प्रेषित कर देती थीं।''[15] महात्मा गांधी ने गुजराती नवजीवन (07 सितंबर 1919) का हिंदी संस्करण 'हिंदी नवजीवन' 1921 में व 'हरिजन सेवक' 1933 में प्रकाशित किया। इसके अतिरिक्त गांधीजी ने साउथ अफ्रिका से 4 जून 1903 से 'इंडियन ओपिनीयन' और 08 अक्टूबर 1919 से 'यंग इंडिया' का प्रकाशन शुरू किया। 'इंडियन ओपिनीयन' का हिंदी, गुजराती और तमिल संस्करण भी प्रकाशित किया जाता था।

गांधी युग में मदन मोहन मालवीय का 'अभ्युदय' (1907), गणेश शंकर विद्यार्थी का 'प्रताप' (1913), शिवप्रसाद गुप्त का आज (1920), आचार्य नरेंद्रदेव का 'संघर्ष' (1937), कृष्णदत्त पालीवाल

का 'सैनिक' (1925), गिरिजादत्त नैथानी का 'गढ़वाल समाचार' (1901), पंडित सुंदरलाल का 'कर्मयोगी' (1907) और 'भविष्य' (1918), कमलापति त्रिपाठी का 'संसार' (1944) जैसे अनेक पत्र प्रकाशित हुए। इन पत्रों को उग्र माना जाता था। इसी दौर में मध्यप्रदेश से माधवरॉव सप्रे का 'छत्तीसगढ़ मित्र' (1902), माखनलाल चतर्वेदी का 'कर्मवीर' (1919), द्वारिका प्रसाद मिश्र का 'लोकमत' (1930) व 'सारथी' (1941), बैजनाथ व कृष्णकांत व्यास की 'प्रजा मंडल पत्रिका' (1940), जगन्नाथ प्रसाद मिलिंद का 'जीवन' आदि प्रकाशित हुए। इसी क्रम में राजस्थान से 'नवीन राजस्थान' (1922), दुर्गाप्रसाद चौधरी का 'नवज्योति' (1936), अचलेश्वर प्रसाद शर्मा का 'प्रजा सेवक' (1940), कुंजबिहार लाल मोदी की 'अलवर पत्रिका' (1943) में स्वतंत्रता आंदोलन के प्रेरणा स्वरूप प्रकाशित हुई। इस युग में देश के विभिन्न क्षेत्रों से सैकड़ों हिंदी के पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ जिन्होंने हिंदी पत्रकारिता को समृद्ध किया।

**स्वातंत्र्योत्तर युग (1947 से अबतक)**

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी समाचारपत्रों द्वारा स्वाधीनता का राजनैतिक अधिकार मिल गया। अब इस अधिकार को जनोन्मुख बनाने का दायित्व हिंदी समाचारपत्रों ने उठाया। आजादी के बाद से लेकर हजारों की संख्या में हिंदी समाचारपत्रों का प्रकाशन हो रहा है। यह संख्या देश के दूसरी भाषाओं में प्रकाशित होनेवाले सभी समाचारपत्रों से दो गुना है। ''हिंदी समाचार पत्रों के नब्बे के दशक में संकट पर प्रतिक्रिया देते हुए सुरेंद्र प्रताप सिंह ने कहा कि हिंदी पत्रकारिता का स्वर्ण युग चल रहा है। हिंदी और भाषाई समाचार पत्रों की पाठक संख्या, पूंजी, विज्ञापन और मुनाफा लगातार बढ़ रहा है। हां, इस वृद्धि के अनुसार उनके समाचार– विचार को लेकर आप चिंतित हो सकते हैं, पर यह सब समय के साथ ठीक हो जाएगा।''[16] इस दौर के चर्चित हिंदी समाचारपत्रों में दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर, पत्रिका, हिंदुस्तान, नवभारत टाइम्स, जनसत्ता, नवभारत, देशबंधु, जनमोर्चा, अमर उजाला, आज आदि षामिल हैं।

**निष्कर्षः** हिंदी पत्रकारिता का आरंभ करनेवाला साप्ताहिक उदंत मार्तंड की यात्रा बेहद कठिन रही। लेकिन इस पत्र ने हिंदी के भावी पत्र–पत्रिकाओं के लिए एक नया रास्ता खोल दिया। इस साप्ताहिक के आरंभ होने के पूर्व अंग्रेजी पत्रकारिता का प्रभाव पूरे देश में था। इसका संचालन भारतीय और ब्रिटिश दोनों करते थे। बाद में बांग्ला के साथ हिंदी पत्रकारिता को जोड़कर आगे किया गया। यह वह दौर था जब हिंदी अपने पांव पर धीरे– धीरे खड़ा हो रही थी। इस दौर को पूर्व भारतेंदु युग भी कहा जाता है। इस युग में हिंदी पत्रकारिता का अविर्भाव हुआ और भारतेंदु युग में हिंदी पत्रकारिता विकास के साथ अपने पांव पर खड़ा होने लगी। द्विवेदी युग में परिष्कृत होकर गांधी युग में जन–जन तक पहुंच गई। आजादी के बाद हिंदी पत्रकारिता ने अपने प्रभाव और सरोकारों से सभी भाषाओं की पत्रकारिता को पीछे छोड़ दिया।

**संदर्भ**

1. श्रीधर, विजयदत्त. (2010). *भारतीय पत्रकारिता कोश.* खंड–एक. नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन. पृ0सं0–59.

2. वाजपेई, पं. अंबिका प्रसाद. (2015). *समाचार पत्रों का इतिहास.* वाराणसीः ज्ञान मंडल. पृ0सं0–93.
3. मिश्र, कृष्णबिहारी. (2023). *हिंदी पत्रकारिता, जातीय चेतना और खड़ी बोली साहित्य की निर्माण– भूमि.* नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन. पृ0सं0–56.
4. नटराजन, जे. (2002). *भारतीय पत्रकारिता का इतिहास.* (आर. चेतनक्रांति, अनु.). नई दिल्लीः प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार. पृ0सं0–249.
5. गोदरे, विनोद. (2021). *हिंदी पत्रकारिता स्वरूप एवं संदर्भ.* नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन. पृ0सं0– 75.
6. तिवारी, अर्जुन. (2010). *मीडिया समग्र.* नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन. पृ0सं0–300.
7. अनुशब्द. (2014). *हिंदी पत्रकारिता रूपक बनाम मिथक.* नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन. पृ0सं0–95.
8. राजगढ़िया, विष्णु. (2008). *जनसंचार सिद्धांत और अनुप्रयोग.* नई दिल्लीः राधाकृष्ण. पृ0सं0–95.
9. हींगड़, आशाः जैन, मधु व पारीक सुशीला. (2015). *संचार के सिद्धांत.* (संजीव भनावत, संपा). जयपुरः राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी. पृ0सं0–170.
10. कोठारी, सी. आर. (2024). *शोध पद्धति.* नई दिल्लीः न्यू एज इंटरनेशनल (प्रा.) लिमिटेड, पब्लिशर्स. पृ0सं0–3.
11. वाजपेई, पं. अंबिका प्रसाद.(2003). *समाचारपत्रों का इतिहास.* वाराणसीः ज्ञानमंडल. पृ0सं0–102.
12. तिवारी, अर्जून.(2019). *मीडिया समग्र.* नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन. पृ0सं0–300.
13. वाजपेई, पं. अंबिका प्रसाद.(2003). *समाचारपत्रों का इतिहास.* वाराणसीः ज्ञानमंडल. 321.
14. मिश्र, रवींद्रनाथ. (संपा.) (2013). *मीडिया और लोकतंत्र.* नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन. पृ0सं0–25.
15. नटराजन, जे. (2002). *भारतीय पत्रकारिता का इतिहास.* (आर. चेतनक्रांति, अनु.). नई दिल्लीः प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार. पृ0सं0–206.
16. अनुराधा, आर.(2011). *पत्रकारिता का महानायक सुरेंद्र प्रताप सिंह संचयन.* नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन. पृ0सं0–442.